IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

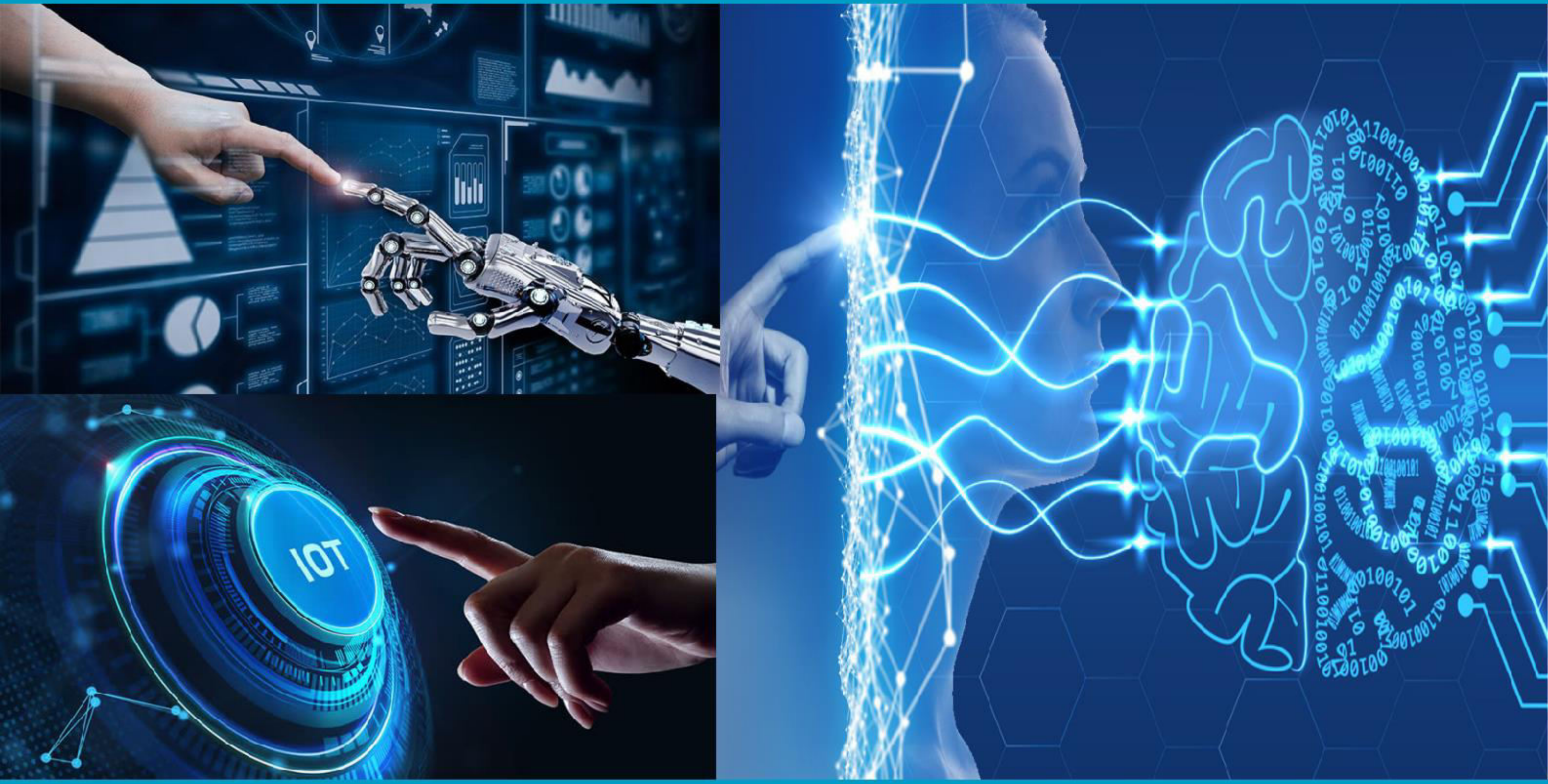

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 4, April 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में प्रेम तत्व

ज्योति कुमारी

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर, राजस्थान, भारत

सार

मलिक मुहम्मद जायसी (1492-1548) हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि थे।[1] वे अत्यंत उच्चकोटि के सरल और उदार सूफ़ी महात्मा थे। जायसी मलिक वंश के थे। मिस्र में सेनापति या प्रधानमंत्री को मलिक कहते थे। दिल्ली सल्तनत में खिलजी वंश राज्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने चाचा को मरवाने के लिए बहुत से मलिकों को नियुक्त किया था जिसके कारण यह नाम उस काल से काफी प्रचलित हो गया था। इरान में मलिक जमींदार को कहा जाता था व इनके पूर्वज वहां के निगलाम प्रान्त से आये थे और वहीं से उनके पूर्वजों की पदवी मलिक थी। मलिक मुहम्मद जायसी के वंशज अशरफी खानदान के चेले थे और मलिक कहलाते थे। फिरोज शाह तुगलक के अनुसार बारह हजार सेना के रिसालदार को मलिक कहा जाता था।[2] जायसी ने शेख बुरहान और सैयद अशरफ का अपने गुरुओं के रूप में उल्लेख किया है। हिन्दी साहित्य के भक्ति काल के पूर्व भारत में अनेक प्रकार के मतमतान्तर, सम्प्रदाय, उप सम्प्रदाय आ दि प्रचलित थे। शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन और नवागत इस्लाम आदि धर्म विभिन्न मानव समहों के रूप में चारों और झाए थे। सिद्ध और नाथ पंथ के योगी अने चमत्कारों द्वारा सता को प्रभावित और कभी-कभी आतंकित करने का भी प्रयत्न करते रहते थे। बौद्ध धर्म अपने बा ह्या चारों और नाना प्रकार की तांत्रिक उपासना-पद्धतियों के कारण विशृंख लित और निष्प्रभ हो चुका था। जैन धर्म बा ह्या चारों और कर्म-काण्डों में फंस राजस्थान, मालवा, उसके आसपास, गुजरात आ दि प्रदेशों में अपना अस्तित्व साए हुए था। उसकी उन्नत चा रिक परम्परा धमिल हो गयी थी। शाक्त, शंव और वष्णव इतने अस हि हो गये थे कि एक दूसरे का विरोध करने में ही अपनी सारी शक्ति लगाए रखते थे। बौद्धों की वाममार्गी व्यक्तिगत साधता ने भी विक्त रूप धारण कर लिया। इसमें सभी प्रकार के अतिशय भोगों द्वारा वैराग्य भावना उत्पन्न करने का सिद्धान्त प्रमुख माना गया था। इसने खुले व्यभिचार, मदिरापान, मास-भक्षण आदि को खूब बढ़ावा दिया। इस लिए आगे चलकर नाथपंथी साधकों ने जीका की पवित्रता को प्रधान मान नारी भोग का पर्ण बहिष्कार कर दिया। इन लोगों ने वाममार्गी भोग-प्रधान साधना-पद्धतियों का पूर्ण बहिष्कार कर एक ऐसी पवित्र, निर्मल और सात्विक साधना पद्धति का प्रवर्तन किया जिसने हिन्दी के संत और सफी कवियों को प्रभा वित किया।

परिचय

जायसी का जन्म सन 1492 ई के आसपास माना जाता है। वे उत्तर प्रदेश के जायस नामक स्थान के रहनेवाले थे।[3] उनके नाम में जायसी शब्द का प्रयोग, उनके उपनाम की भांति, किया जाता है। यह भी इस बात को सूचित करता है कि वे जायस नगर के निवासी थे। इस संबंध में उनका स्वयं भी कहना है-

जायस नगर मोर अस्थानू।
नगरक नांव आदि उदयानू।
तहां देवस दस पहुने आएऊं।
भा वैराग बहुत सुख पाएऊं॥ [4]

इससे यह पता चलता है कि उस नगर का प्राचीन नाम उदयान था, वहां वे एक पहुने जैसे दस दिनों के लिए आए थे, अर्थात उन्होंने अपना नश्वर जीवन प्रारंभ किया था अथवा जन्म लिया था और फिर वैराग्य हो जाने पर वहां उन्हें बहुत सुख मिला था। जायस नाम का एक नगर उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में आज भी वर्तमान है, जिसका एक पुराना नाम उद्यानगर 'उद्यानगर या उज्जालिक नगर' बतलाया जाता है तथा उसके कंचाना खुर्द नामक मुहल्ले में मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म-स्थान होना भी कहा जाता है।[2] कुछ लोगों की धारणा कि

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

जायसी की किसी उपलब्ध रचना के अंतर्गत उसकी निश्चित जन्म-तिथि अथवा जन्म-संवत का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं पाया जाता। एक स्थल पर वे कहते हैं,

भा अवतार मोर नौ सदी।
तीस बरिख ऊपर कवि बदी॥ [5]

जिसके आधार पर केवल इतना ही अनुमान किया जा सकता है कि उनका जन्म संभवतः ८०० हि० एवं ९०० हि० के मध्य, तदनुसार सन १३९७ ई० और १४९४ ई० के बीच किसी समय हुआ होगा तथा तीस वर्ष की अवस्था पा चुकने पर उन्होंने काव्य-रचना का प्रारंभ किया होगा। पद्मावत का रचनाकाल उन्होंने ९४७ हि० [6] अर्थात १५४० ई० बतलाया है। पद्मावत के अंतिम अंश (६५३) के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि उसे लिखते समय तक वे वृद्ध हो चुके थे।

उनके पिता का नाम मलिक राजे अशरफ़ बताया जाता है और कहा जाता है कि वे मामूली ज़मींदार थे और खेती करते थे। स्वयं जायसी का भी खेती करके जीविका-निर्वाह करना प्रसिद्ध है। जायसी ने अपनी कुछ रचनाओं में अपनी गुरु-परंपरा का भी उल्लेख किया है। उनका कहना है, सैयद अशरफ़, जो एक प्रिय संत थे मेरे लिए उज्ज्वल पंथ के प्रदर्शक बने और उन्होंने प्रेम का दीपक जलाकर मेरा हृदय निर्मल कर दिया।। जायसी कुरुप व काने थे । [1]एक मान्यता अनुसार वे जन्म से ऐसे ही थे किन्तु अधिकतर लोगों का मत है कि शीतला रोग के कारण उनका शरीर विकृत हो गया था। अपने काने होने का उल्लेख जायसी ने स्वयं ही इस प्रकार किया है - एक नयन कवि मुहम्मद गुनी। अब उनकी दाहिनी या बाईं कौन सी आंख फूटी थी, इस बारे में उन्हीं के इस दोहे को सन्दर्भ लिया जा सकता है:

मुहमद बाईं दिसि तजा, एक सरवन एक आँखि।

इसके अनुसार यह भी प्रतीति होती है कि उन्हें बाएँ कान से भी उन्हें कम सुनाई पड़ता था।[2] जायस में एक कथा सुनने को मिलती है कि जायसी एक बार जब शेरशाह के दरबार में गए तो वह इन्हें देखकर हँस पड़ा। तब इन्होंने शांत भाव से पूछा - मोहिका हससि, कि कोहरहि? यानि तू मुझ पर हँसा या उस कुम्हार (ईश्वर) पर? तब शेरशाह ने लज्जित हो कर क्षमा माँगी। एक अन्य मान्यता अनुसार वे शेरशाह के दरबार में नहीं गए थे, बल्कि शेरशाह ही उनका नाम सुन कर उनके पास आया था। [7]

स्थानीय मान्यतानुसार जायसी के पुत्र दुर्घटना में मकान के नीचे दब कर मारे गए जिसके फलस्वरूप जायसी संसार से विरक्त हो गए और कुछ दिनों में घर छोड़ कर यहां वहां फकीर की भांति घूमने लगे। अमेठी के राजा रामसिंह उन्हें बहुत मानते थे। अपने अंतिम दिनों में जायसी अमेठी से कुछ दूर एक घने जंगल में रहा करते थे। लोग बताते हैं कि अंतिम समय निकट आने पर उन्होंने अमेठी के राजा से कह दिया कि मैं किसी शिकारी के तीर से ही मरूँगा जिस पर राजा ने आसपास के जंगलों में शिकार की मनाही कर दी। जिस जंगल में जायसी रहते थे, [3]उसमें एक शिकारी को एक बड़ा बाघ दिखाई पड़ा। उसने डर कर उस पर गोली चला दी। पास जा कर देखा तो बाघ के स्थान पर जायसी मरे पड़े थे। जायसी कभी कभी योगबल से इस प्रकार के रूप धारण कर लिया करते थे।[7] काजी नसरुद्दीन हुसैन जायसी ने, जिन्हें अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सनद मिली थी, मलिक मुहम्मद का मृत्युकाल रज्जब ९४९ हिजरी (सन् १५४२ ई.) बताया है। इसके अनुसार उनका देहावसान ४९ वर्ष से भी कम अवस्था में सिद्ध होता है किन्तु जायसी ने 'पद्मावत' के उपसंहार में वृद्धावस्था का जो वर्णन किया है वह स्वत: अनुभूत - प्रतीत होता है। जायसी की कब्र अमेठी के राजा के वर्तमान महल से लगभग तीन-चैथाई मील के लगभग है। यह वर्तमान किला जायसी के मरने के बहुत बाद बना है। [4]अमेठी के राजाओं का पुराना किला जायसी की कब्र से डेढ़ कोस की दूरी पर था। अत: यह धारणा प्रचलित है कि अमेठी के राजा को जायसी की दुआ से पुत्र हुआ और उन्होंने अपने किले के समीप ही उनकी कब्र बनवाई, निराधार है। इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि अमेठी नरेश इनके संरक्षक थे। एक अन्य मान्यता अनुसार उनका देहांत १५५८ में हुआ।[5]

विचार-विमर्श

उनकी २१ रचनाओं के उल्लेख मिलते हैं जिसमें पद्मावत, अखरावट, आख़िरी कलाम, कहरनामा, चित्ररेखा, कान्हावत आदि प्रमुख हैं। पर उनकी ख्याति का आधार पद्मावत ग्रंथ ही है।[8] इसमें पद्मिनी की प्रेम-कथा का रोचक वर्णन हुआ है।[9] रत्नसेन की पहली पत्नी नागमती के वियोग का अनूठा वर्णन है।[10] इसकी भाषा अवधी है और इसकी रचना-शैली पर आदिकाल के जैन कवियों की दोहा चौपाई पद्धति का प्रभाव पड़ा है।[6]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मध्यकालीन कवियों की गिनती में जायसी को एक प्रमुख कवि के रूप में स्थान दिया है। शिवकुमार मिश्र के अनुसार शुक्ल जी की दृष्टि जब जायसी की कवि प्रतिभा की ओर गई और उन्होंने जायसी ग्रंथावली का संपादन करते हुए उन्हें प्रथम श्रेणी

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

के कवि के रूप में पहचाना, उसके पहले जायसी को इस रूप में नहीं देखा और सराहा गया था।[11] इसके अनुसार यह स्वाभाविक ही लगता है कि जायसी की काव्य प्रतिभा इन्हें मध्यकाल के दिग्गज कवि गोस्वामी तुलसीदास के स्तर कि लगती है। इसी कारण से उन्हें तुलसी के समक्ष जायसी से बड़ा कवि नहीं दिखा। शुक्ल जी के अनुसार जायसी का क्षेत्र तुलसी की अपेक्षा परिमित है, पर प्रेमवेदना अत्यंत गूढ़ है। [12][13]अखरावट जायसी कृत एक सिद्धांत प्रधान ग्रंथ है। इस काव्य में कुल ५४ दोहे ५४ सोरठे और ३१७ अर्द्धलिया हैं। इसमें दोहा, चौपाई और सोरठा छंदों का प्रयोग हुआ है। एक दोहा पुनः एक सोरठा और पुनः ७ अर्द्धलियों के क्रम का निर्वाह अंत तक किया गया है। अखरावट में मूलतः चेला गुरु संवाद को स्थान दिया गया है।[7]

अखरावट का रचनाकाल :-

अखरावट के विषय में जायसी ने इसके काल का वर्णन कहीं नहीं किया है। सैय्यद कल्ब मुस्तफा के अनुसार यह जायसी की अंतिम रचना है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अखरावट पद्मावत के बाद लिखी गई होगी, क्योंकि जायसी के अंतिम दिनों में उनकी भाषा ज्यादा सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित हो गई थी, इस रचना की भाषा ज्यादा व्यवस्थित है। इसी में जायसी ने अपनी वैयक्तिक भावनाओं का स्पष्टीकरण किया है। इससे भी यही साबित होता है, क्योंकि कवि प्रायः अपनी व्यक्तित्व भावनाओं स्पष्टीकरण अंतिम में ही करता है।[8]

मनेर शरीफ से प्राप्त पद्मावत के साथ अखरखट की कई हस्तलिखित प्रतियों में इसका रचना काल दिया है। "अखरावट" की हस्तलिखित प्रति पुष्पिका में जुम्मा ८ जुल्काद ९११ हिजरी का उल्लेख मिलता है। इससे अखरावट का रचनाकाल ९११ हिजरी या उसके आस पास प्रमाणित होता है।[9]

अखरावट का कथावस्तु :-

१. सृष्टि :

अखरावट के आरंभ में जायसी ने इस्लामिक धर्मग्रंथों और विश्वासों के आधार पर आधारित सृष्टि के उद्भव तथा विकास की कथा लिखी है। उनके इस कथा के अनुसार सृष्टि के आदि में महाशुन्य था, उसी शुन्य से ईश्वर ने सृष्टि की रचना की गई हे। उस समय गगन, धरती, सूर्य, चंद्र जैसी कोई भी चीज मौजूद नहीं थी। ऐसे शुन्य अंधकार में सबसे पहले पैगम्बर मुहम्मद की ज्योति उत्पन्न की --

गगन हुता नहिं महि दुती, हुते चंद्र नहिं सूर

ऐसइ अंधकूप महं स्पत मुहम्मद नूर।।

कुरान शरीफ एवं इस्लामी रवायतों में यह कहा जाता है कि जब कुछ नहीं था, तो केवल अल्लाह था। प्रत्येक जगह घोर अंधकार था। भारतीय साहित्य में भी इस संसार की कल्पना "अश्वत्थ' रुप में की गई है।[10]

सातवां सोम कपार महं कहा जो दसवं दुवार।

जो वह पवंकिंर उधारै, सो बड़ सिद्ध अपार।।

इस पंक्तियों में जायसी ने मनुष्य शरीर के परे, गुद्येन्द्रिय, नाभि, स्तन, कंठ, भौंहों के बीच के स्थान और कपाल प्रदेशों में क्रमशः शनि, वृहस्पिति, मंगल, आदित्य, शुक्र, बुध और सोम की स्थिति का निरोपण किया है। ब्रह्म अपने व्यापक रुप में मानव देह में भी समाया हुआ है --

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

माथ सरग घर धरती भयऊ।

मिलि तिन्ह जग दूसर होई गयऊ।।

माटी मांसु रकत या नीरु।

नसे नदी, हिय समुद्र गंभीरु।।

इस्लामी धर्म के तीर्थ आदि का भी कवि ने शरीर में ही प्रदर्शित किया है --

सातौं दीप, नवौ खंड आठो दिशा जो आहिं।

जो ब्राह्मड सो पिंड है हेरत अंत न जाहिं।।

अगि, बाड, धुरि, चारि मरइ भांड़ा गठा।

आपु रहा भरि पूरि, मुहमद आपुहिं आपु महं।।

कवि के अनुसार शरीर को ही जग मानना चाहिए। धरती और आकाश इसी में उपस्थित है। मस्तक, मक्का तथा हृदय मदीना है, जिसमें नवी या पैगम्बर का नाम सदा रहता है। इसी प्रकार अन्य वस्तुओं को भी इसी प्रकार निर्देशित किया गया --

नाकि कंवल तर नारद लिए पांच कोतवार।

नवो दुवारि फिरै निति दसई कारखवार।।

अर्थात्, नाभि कमल के पास कोतवाल के रुप में शैतान का पहरा है।

जीव ब्रह्मा :

मलिक मुहम्मद जायसी के कथनानुसार ब्रह्मा से ही यह समस्त सृष्टि आपूर्ति की गयी है। उन्होंने आगे फरमाया कि जीव बीज रुप में ब्रह्मा में ही था, इसी से अठारह सहस्र जीवयोगियों की उत्पत्ति हुई है -

वै सब किछु करता किछु नाहीं।

जैसे चलै मेघ परिछाही।।

परगट गुपुत विचारि सो बूझा।

सो तजि दूसर और न सूफा।।

जीव पहले ईश्वर में अभिन्न था। बाद में उसका बिछोह हो गया। ईश्वर का कुछ अंश घट- घट में समाया है -

सोई अंस छटे घट मेला।

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

जो सोइ बरन- बरन होइ खेला।।

जायसी बड़ी तत्परता से कहते हैं कि संपूर्ण जगत ईश्वर की ही प्रभुता का विकास है। कवि कहता है कि मनुष्य पिंड के भीतर ही ब्रह्मा और समस्त ब्रह्माण्ड है, जब अपने भीतर ही ढूँढ़ा तो वह उसी अनंत सत्ता में विलीन हो गया[11] --

बुंदहिं समुद्र समान, यह अचरज कासों कहों।

जो हेरा सो हेरान, मुहमद आपुहि आप महं।।

इससे आगे कवि कहता है कि "जैसे दूध में घी और समुद्र में पोती की स्थिति है, वही

स्थिति वह परम ज्योति की है, जो जगत भीतर- भीतर भासित हो रही है। कवि कहता है कि वस्तुतः एक ही ब्रह्म के चित अचित् दो पक्ष हुए, दोनों पक्षों के भीतर तेरी अलग सत्ता कहाँ से आई। आज के सामाजिक परिदृश्य में उनका यह प्रश्न अधिक उचित है --

एक हि ते हुए होइ, दुइ सौ राज न चलि सके।

बीचतें आपुहि खोइ, मुहम्मद एकै होइ रहु।।

साधना :

"प्रेम- प्रभु' की साधना ही सूफी साधना है। इसके अन्तर्गत साधक अपने भीतर बिछुड़े हुए प्रियतम के प्रति प्रेम की पीर को जगाता है। पहले जीव- ब्रह्मा एक थे। वह पुनः अपने बिछुड़े हुए प्रियतम से मिलकर अभेदता का आनंद पाना चाहता है।[12]

हुआ तो एक ही संग, हम तुम काहे बिछुड़े।

अब जिउ उठै तरंग, महमद कहा न जाईन किछु।।

कबीर की तरह जायसी भी प्रेम को अत्यंत ही महत्वपूर्ण बताते हुए कहते हैं --

परै प्रेम के झेल, पिउ सहुँ धनि मुख सो करे।

जो सिर संती खेल, मुहम्मद खेल हो प्रेम रस।।

जायसी के कथनानुसार किसी सिद्धांत विशेष का यह कहना कि ईश्वर ऐसा ही है, भ्रम है --

सुनि हस्ती का नाव अंधरन रोवा धाइ के।

जेइ रोवा जेइ ठांव मुहम्मद सो तेसे कहे।।

इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक मत में सत्य का कुछ- न- कुछ अंश रहता है।

जायसी भी मुहम्मद के मार्ग को श्रेष्ठ मानते हुए भी विधना के अनेक मार्गों को स्वीकार करते हैं। वह अपने लेखन में या साधना में एक सिद्धांत में बंधना नहीं चाहते हैं। जायसी अपनी उदास और सारग्रहिणी बुद्धि के फलस्वरुप योग, उपनिषद्, अद्वेतवाद, भक्ति, इस्लामी,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

एकेश्वरवाद आदि से बहुत कुछ सीखते हैं। वे कहते हैं कि वह सभी तत्व जो ग्राम्ह है, प्रेम की पीर जगाने में समर्थ है। ब्रह्मावाद, योग और इस्लामी- सूफी सिद्धांतों का समन्वय जायसी की अपनी विशेषता है। अखरावट में वह कहते हैं --

मा- मन मथन करै तन खीरु।

हुहे सोइ जो आपु अहिरु।।

पाँचों भुत आनमहि मारैं।

गरग दरब करसी के जारे।।

मन माठा- सम अस के धोवै।

तन खेला तेहि माहं बिलोबे।।

जपहु बुद्धि के दुइ सन फरेहु।

दही चूर अस हिंया अभेरहु।।

पछवां कदुई केसन्ह फेरहु।

ओहि जोति महं जोति अभेरहु।।

जस अन्तपट साढ़ी फूटे।

निरमल होइ मयां सब टूटे।।

मखनमूल उठे लेइ जोति।

समुद माहं जस उलटे कोती।।

जस घिड़ होइ मराइ के, तस जिऊ निरमल होइ।

महै महेरा दूरि करि, भोग कर सुख सोइ।।

अद्वैतवाद के आधार पर ही जायसी मूल्यतः अपने अध्यात्म जगत का निर्माण किया है --

अस वह निरमल धरति अकासा।

जैसे मिली फूल महं बरसा।।

सबै ठांव ओस सब परकारा।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

ना वह मिला, न रहै निनारा।।

ओहि जोति परछाहीं, नवो खण्ड उजियार।

सुरुज चाँद कै जोती, उदित अहै संसार।।

अखरावट में जायसी ने उदारतापूर्वक इस्लामी भावनाओं के साथ भारतीय हिंदू भावनाओं के सामंजस्य का प्रयत्न किया है। जायसी इस्लाम पर पूर्ण आस्था रखते थे, किंतु उनकी यह इस्लाम भावना सुफी मत की नवीन व्यवस्थाओं से संबंधित है। उनका इस्लाम योगमत योगाचार-विधानों से मण्डित है और हिंदू- मुस्लिम दोनों एक ब्रह्मा की संतान हैं, की भावना से अलंकृत है। ब्रह्मा विष्णु और महेश के उल्लेख "प्रसंग वश' "अल्लिफ एक अल्लाह बड़ मोइ' केवल एक स्थान पर अल्लाह का नामोल्लेख, कुरान के लिए कुरान और पुराण के नामोल्लेख, स्वर्ग या बिहिश्त के लिए सर्वत्र कैलाश या कविलास के प्रयोग अहं ब्राह्मास्मि या अनलहक के लिए सांह का प्रयोग, [13] इब्लीस या शैतान के स्थान पर "नारद' का उल्लेख योग साधना के विविध वर्णन प्रभृति बातें इस बात की ओर इंगित करती है कि जायसी हिंदू- मुस्लिम भावनाओं में एकत्व को दृष्टि में रखते हुए समन्वय एवं सामंजस्य का प्रयत्न करते हैं। मलिक मुहम्मद जायसी ने हिंदू- मुस्लिम की एकता के विषय में अत्यंत नम्रंतापूर्वक कहा --

तिन्ह संतति उपराजा भांतिन्ह भांति कुलीन।

हिंदू तुरुक दुवौ भए, अपने अपने दीन।।

मातु कै रक्त पिता के बिंदू।

उपने दुवौ तुरुक और हिंदू।।

जायसी की यह सामंजस्य भावना उनके उदार मानवतावादी दृष्टिकोण की परिचायक है।

आखिरी कलाम :

जायसी रचित महान ग्रंथ का सर्वप्रथम प्रकाशन फारसी लिपि में हुआ था। इस काव्य में जायसी ने मसनवी- शैली के अनुसार ईश्वर- स्तुति की है। अपने अवतार ग्रहण करने तथा भुकंप एवं सूर्य- ग्रहण का भी उल्लेख किया है। इस के अलावा उन्होंने मुहम्मद स्तुति, शाहतरत-बादशाह की प्रशस्ति और सैय्यद अशरफ की वंदना, जायस नगर का परिचय बड़ी सुंदरता से उल्लेख किया है। जैसा कि जायसी ने अपने काव्य अखरखट में संसार की सृष्टि के विषय में लिखा था। इस आखरी काव्य में जायसी ने आखरी कलाम नाम के अनुसार संसार के खत्म होने एवं पुनः सारे मानवों को जगाकर उसे अपना दर्शन कराने एवं जन्नत की भोग विलास के सूपुर्द करने का उल्लेख किया है।[14]

चित्ररेखा :

जायसी ने पद्मावत की ही भांति "चित्ररेखा' की शुरुआत भी संसार के सृजनकर्ता की वंदना के साथ किया है। इसमें जायसी ने सृष्टि की उद्भाव की कहानी कहते हुए करतार की प्रशंसा में बहुत कुछ लिखा है। इसके अलावा इसमें उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद साहब और उनके चार मित्रों का वर्णन सुंदरता के साथ किया है। इस प्रशंसा के बाद जायसी ने इस काव्य की असल कथा आरंभ किया है।[15]

इसकी कथा चंद्रपुर नामक एक अत्यंत सुंदर नगर के राजा, जिनका नाम चंद्रभानु था, की कथा प्रारंभ किया है। इसमें राजा चंद्र भानु की चाँद के समान अवतरित हुई पुत्री चित्ररेखा की सुंदरता एवं उसकी शादी को इस प्रकार बयान किया है --

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

चंद्रपुर की राजमंदिरों में ७०० रानियाँ थी। उनमें रुपरेखा अधिक लावण्यमयी थी। उसके गर्भ से बालिका का जन्म हुआ। ज्योतिष और गणक ने उसका नाम चित्ररेखा रखा तथा कहा कि इसका जन्म चंद्रपुर में हुआ है, किंतु यह कन्नौज की रानी बनेगी। धीरे- धीरे वह चाँद की कली के समान बढ़ती ही गयी। जब वह स्यानी हो गयी, तो राजा चंद्रभानु ने वर खोजने के लिए अपने दूत भेजे। वे ढ़ंढ़ते- ढ़ंढ़ते सिंहद देश के राजा सिंघनदेव के यहाँ पहुँचे और उसके कुबड़े बेटे से संबंध तय कर दिया।

कन्नौज के राजा कल्याणसिंह के पास अपार दौलत, जन व पदाति, हस्ति आदि सेनाएँ थी। तमाम संपन्नता के बावजूद उसके पास एक पुत्र नहीं था। घोर तपस्या एवं तप के पश्चात उनकी एक राजकुमार पैदा हुआ, जिसका नाम प्रितम कुँवर रखा गया। ज्योतिषियों ने कहा कि यह भाग्यवान अल्पायु है। इसकी आयू केवल बीस वर्ष की है। जब उसे पता चला कि उसकी उम्र सिर्फ ढ़ाई दिन ही रह गई है, तो उन्होंने पुरा राजपाट छोड़ दिया और काशी में अंत गति लेने के लिए चल पड़ा।[16]

रास्ते में राजकुमार को राजा सिंघलदेव से भेंट हो गयी। राजा सिंघलदेव ने राजकुमार प्रीतम कुँवर के पैर पकड़ लिए। उसकी पुरी और नाम पूछा तथा विनती की, कि हम इस नगर में ब्याहने आए हैं। हमारा वर कुबड़ा है, तुम आज रात ब्याह कराकर चले जाना और इस प्रकार चित्ररेखा का ब्याह, प्रीतम सिंह से हो जाता है। प्रीतम सिंह को व्यास के कहने से नया जीवन मिलता है।

चित्ररेखा में प्रेम की सर्वोच्चयता :

जायसी प्रेम पंथ के महान साधक- संत थे। प्रेम पंथ में उन्होंने प्रेम पीर की महत्ता का प्रतिपादन किया है। व्यर्थ की तपस्या काम- क्लेश एवं बाह्याडम्बर को वह महत्वहीन मानते थे :-

का भा पागट क्या पखारे।

का भा भगति भुइं सिर मारें।।

का भा जटा भभूत चढ़ाए।

का भा गेरु कापरि जाए।।

का भा भेस दिगम्बर छांटे।

का भा आयु उलटि गए कांटे।।

जो भेखहि तजि तु गहा।

ना बग रहें भगत व चहा।।

पानिहिं रहइं मंछि औदादुर।

टागे नितहिं रहहिं फुनि गादुर।।

पसु पंछी नांगे सब खरे।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

भसम कुम्हार रहइं नित भरे।।

बर पीपर सिर जटा न थोरे।

अइस भेस की पावसि भोऐ।।

जब लगि विरह न होइ तन हिये न उपजइ प्रेम।

तब लगि हाथ न आव पत- काम- धरम- सत नेम।।

जायसी अपने समय के कृच्छ- काय- क्लेश और नाना विध बाह्माडम्बर को साक्ष्य करते हुए कहते हैं कि प्रकट भाव से काया प्रक्षालन से कोई फायदा नहीं हो सकता है। धरती पर सिंर पटकने वाली साधना व्यर्थ है। जटा और भभुत बढ़ाने चढ़ाने का कोइ मूल्य नहीं है। गैरिक वसन धारण करने से कुछ नहीं होता है। दिगम्बर योगियों का सा रहना भी बेकार हे। काँटे पर उत्तान सोना और साधक होने का स्वांग भरना निष्प्रयोजन है। देश त्याग का मौन व्रती होना भी व्यर्थ है। इस प्रकार के योगी की तुलना वर बगुला और चमगादड़ से करते हैं। वे कहते हैं केश- वेश से ईश्वर कदापि नहीं मिलता है। जब वह विरह नहीं होता, हृदय में प्रेम की निष्पति नहीं हो सकती है। बिना प्रेम के तप, कर्म, धर्म और सतनेम की सच्चे अर्थों में प्राप्ति नहीं हो सकती है। जायसी सहजप्रेम विरह की साधना को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।[17]

कहरानामा :-

कहरानामा का रचना काल ९४७ हिजरी बताया गया है। यह काव्य ग्रंथ कहरवा या कहार गीत उत्तर प्रदेश की एक लोक- गीत पर आधारित में कवि ने कहरानाम के द्वारा संसार से डोली जाने की बात की है।

या भिनुसारा चलै कहारा होतहि पाछिल पहारे।

सबद सुनावा सखियन्ह माना, हंस के बोला मारा रे।।

जायसी ने हिंदी में कहारा लोक धुनि के आधार पर इस ग्रंथ की रचना करके स्वयं को गाँव के लोक जीवन एवं सामाजिक सौहार्द बनाने का प्रयत्न किया है। कहरानामा में कहरा का अर्थ कहर, कष्ट, दुख या कहा और गीत विशेष है। हमारे देश भारत ब्रह्मा का गुणगान करना, आत्मा और परमात्मा के प्रेम परक गीत गाना की अत्यंत प्राचीन लोक परंपरा है।[18]

कहरानामा की कथा :-

"कहरानामा' तीस पदों की एक प्रेम कथा है। इस कथानुमा काव्य में लेखक जायसी के कथानुसार संसार एक सागर के समान है। इसमें धर्म की नौका पड़ी हुई है। इस नौका का केवट एक ही है। वे कहते हैं कि कोई पंथ को तलवार की धार कहता है, तो कोई सूत कहता है। कई लोग इस सागर में तैरते हुए हार गया है और बीच में खड़ा है, कोई मध्य सागर में डूबता है और सीप ले आता है, कोई टकटोर करके छूंछे ही लौटता है, कोई हाथ- छोड़ कर पछताता है। जायसी बड़े ही अच्छे अंदाज में दुनिया की बेवफाई और संसार के लोगों की बेरुखी को जगजाहिर करते हैं--

जो नाव पर चढ़ता है, वह पार उतरता है और नख चले जाने पर, जो बांह उठाकर पुकारता है और केवट लौटता नहीं, तो वह पछताता है, ऐसे लोगों को "मुखे अनाड़ी' कहते हैं। बहुत दूर जाना है, रोने पर कौन सुनता है। जो गाँट पूरे हैं, जो दानी हैं, उनसे हाथ पकड़ कर केवट नाव पर चढ़ा लेता है, वहाँ कोई भाई, बंधु और सुंघाती नहीं। जायसी कहते हैं कि साधक को इस संसार में परे संभाल कर रखना चाहिए अन्यथा पदभ्रश होने का भय है। जायसी ने योग युक्ति, मन की चंचलता को दूर करने भोगों से दूर रहने और प्रेम प्रभु में मन रमाने की बातें कहीं हैं। इससे आगे वे कहते हैं, ईश्वर जिसे अपना सेवक समझता है, उसे वह भिखारी बना देता है।[19]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

जो सेवक आपून के जानी

तेहि धरि भीख मंगावे रे।

कबिता पंडित दूक्ख- दाद महं,

मुरुख के राज करावै रे।।

चनदन गहां नाग हैं तहवां।

जदां फूल तहां कंटा रे।।

मधू जहवां है माखी तहवा,

गुर जहवा तहं चांटा रे।।

केहरानामा में कहारों के जीवन और वैवाहिक वातावरण के माध्यम से कवि ने अपने अध्यात्मिक विचारों को अभिव्यक्त किया है --

या भिनुसारा चलै कंहारा, होता हि पाछिल पहरारे

सखी जी गवहि हुडुक बाजाहिं हंसि के बोला मंहा रे।।

हुडुक तबर को झांझ मंजीरा, बांसुरि महुआ बाज रे।

सेबद सुनावा सखिन्ह गावा, घर- घर महरीं साजै रे।

पुजा पानि दुलहिन आनी, चुलह भा असबारा रे।।

बागन बाजे केवट साजै

या बसंत संसारा रे।

मंगल चारा होइझंकारा

औ संग सेन सेहली रे।

जनु फुलवारी फुलीवारी

जिनकर नहिं रस केली रे।।

सेंदूर ले- ले मारहिं धै- धै

राति मांति सुभ डोली रे।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

भा सुभ मेंसु फुला टेसू,

जनहु फाग होइ होरी रे।।

कहै मुहम्मद जे दिन अनंदा,

सो दिन आगे आवे रे।

है आगे नग रेनि सबहि जग,

दिनहि सोहाग को पखे रे।

"" मसला :"

यह जायसी एक काव्य रचना है। इसके आरंभ में जायसी ने अल्लाह से मन लगाने की बात कही है --

यह तन अल्लाह मियां सो लाई।

जिहि की षाई तिहि की गाई।।

बुधि विद्या के कटक मो हों मन का विस्तार।

जेहि घर सासु तरुणि हे, बहुअन कौन सिंगार।।

जायसी कहते हैं, अगर जीवन को निष्प्रेम भाव से जीवन- निर्वाह किया जाए, तो वह व्यर्थ है, जिस हृदय में प्रेम नहीं, वहाँ ईश्वर का वास नहीं हो सकता है। भला सुने गांव में कोई आता है--

बिना प्रेम जो जीवन निबाहा।

सुने गाऊँ में आवै काहा।।

पद्मावत :

जायसी हिंदी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। उनकी रचना का महानकाव्य पद्मावत हिंदी भाषा के प्रबंध काव्यों में शब्द अर्थ और अलंकृत तीनों दृष्टियों से अनूठा काव्य है। इस कृति में श्रेष्टतम प्रबंध काव्यों के सभी गुण प्राप्त हैं। धार्मिक स्थलों की बहुलता, उदात्त लौकिक और ऐतिहासिक कथा वस्तु- भाषा की अत्यंत विलक्षण शक्ति, जीवन के गंभीर सर्वागिंण अनुभव, सशक्त दार्शनिक चिंतन आदि इसकी अनेक विशेषताएँ हैं। सचमुच पद्मावत हिंदी साहित्य का एक जगमगाता हुआ हीरा है। अवधी भाषा के इस उत्तम काव्य में मानव-जीवन के चिरंतन सत्य प्रेम- तत्व की उत्कृष्ट कल्पना है। कवि से शब्दों में इस प्रेम कथा का मर्म है। गाढ़ी प्रीति नैन जल भेई। रत्नसेन और पद्मावती दोनों के जीवन का अंतर्यामी सूत्र है। प्रेम- तत्व की दृष्टि से पद्मावत का जितना भी अध्ययन किया जाए, कम है। संसार के उत्कृष्ट महाकाव्यों में इसकी गिनती होने योग्य है। पद्मावत में सूफी और भारतीय सिद्धांतों का समन्वय का सहारा लेकर प्रेम पीर की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की गई है।[20]

पद्मावत का रचनाकाल :-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत के रचनाकाल का उल्लेख करते हुए लिखा है :-

सन नौ से सैतांलिस अहे।

कथा आरंभ बेन कवि कहै।।

इस काल में दिल्ली की गद्दी पर शेरशाह बैठ चुका था। जायसी ने शाह तत्वत के रुप में दिल्ली के सुल्तान शेरशाह के वैभव को अत्यंत वैभववंत उल्लेख किया है :-

सेरसादि दिल्ली सुल्तानू।

चरिऊ खण्ड तपइ जसभानू।।

कुलश्रेष्ट जी ने ९२७ हिजरी को इस महानकाल का रचनाकाल माना है। उनका कहना था, इस समय जायसी का पद्मावत अधुरा पड़ा था, उन्होंने इसी समय पूरा किया और इसे ९३६ तक पूरा कर लिया था।

पद्मावत की लिपि :-

कुछ विद्वान इसे निश्चित रुप में फारसी लिपि में लिखी मानते हैं। कुछ भागराक्षरों में और कुछ विद्वान केथी अक्षरों में लिखा मानते हैं।

डा. ग्रियसन ने लिखा है कि मूलतः पद्मावत फारसी अक्षरों में लिखा गया और इसका कारण जायसी का धर्म था। हिंदी लिपि में उन्हें पीछे से लोगों ने उतारा हे।

एक विद्वान ने बताया है कि जासयी की पद्मावत नागरी अक्षरों में लिखी गई थी। इनका मत यह है कि जायसी के समय में उर्दू का नाम नहीं था और हिंदी भाषा को लिखने के लिए फारसी अक्षरों में आवश्यक विचार भी नहीं हुए थे। अतः जासयी ने अपनी रचना के लिए उर्दू लिपि का चयन कदापि नहीं किया था। इसका कारण यह है कि उस काल में ऐसे अक्षर वर्तमान नहीं थे।[21]

एक मत यह भी है कि जायसी का उद्देश्य हिंदू जनता में सूफी मत का प्रचार करना था, इसलिए उन्होंने स्वभवतः नागरी लिपि में लिखा होगा।

उपर्युक्त विवरण से यह माना जा सकता है कि पद्मावत की रचना नागरी लिपि में हुई थी। इसी लिपि में जायसी, जनता व साधारण जनता के सामने मकबूल थे। इसलिए उन्होंने इस लिपि को अपने सूफी मत के प्रचार के लिए चुना होगा।

पद्मावत की भाषा पूरब की हिंदी है।

पद्मावत की कथा :-

जायसी ने कल्पना के साथ- साथ इतिहास की सहायता से अपने पद्मावत की कथा का निर्माण किया है।[22]

भारतवर्ष के सूफी कवियों ने लोकजीवन तथा साहित्य में प्रचलित निजंधरी कथाओं के माध्यम से अपने अध्यात्मिक संदेशों को जनता तक पहुँचाने के प्रयत्न किए हैं। पद्मावती की कहानी जायसी की अपनी निजी कल्पना न होकर पहले से प्रचलित कथा के अर्थ को उन्होंने नये सिरे से स्पष्ट किया है --

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

सन् नरे सौ तृतालिस अहा।

कथा आरंभ बैन कवि कहा।।

सिंहलद्वीप पद्मिनी रानी।

रतनसेन चितउर गढ़ आनी।।

अलाउद्दीन देहली सुल्तानू।

राघव चेतन कीन्ह बखानू।।

सुना साहि गढ़ छेंकन आई।

हिंदू तुरकन्ह भई लराई।।

आदि अंत जस गाथा अहै।

लिखि भासा चौपाई कहै।।

इस पंक्तियों में जायसी स्वयं बताते हैं कि आदि से अंत तक जैसी गाथा है, उसे ही वे माखा चौपाई में निबंद्ध करके प्रस्तुत कर रहे हैं। जायसी का दावा है कि पद्मावती की कथा रसपूर्ण तथा अत्यंत प्राचीन थी --

कवि वियास कंवला रसपूरी।

दूरि सो निया नियर सो दूरी।।

नियरे दूर फूल जस कांटा।

दूरि सो नियारे जस गुरु चांटा।।

भंवर आई बन खण्ड सन लई कंवल के बास।

दादूर बास न पावई भलहि जो आछै पास।।

कवि इस पंक्ति के द्वारा बताना चाहता है कि यहाँ एक- से- एक बढ़कर कवि हुए हैं और यह कथा भी रस से भरी पड़ी है।

परिणाम

वे अत्यंत उच्च कोटि के सरल और उदार सूफ़ी महात्मा थे। हिंदी साहित्य में तुलसीदास और सूरदास के समान ही उनका पर्याप्त महत्त्व है। वे प्रेम की पीर के कवि माने जाते हैं। जायसी के जन्म के संबंध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। मसनवी शैली में रचित उनकी अमर कृति पद्मावत में शाहे वक्त के साथ-साथ कवि का भी परिचय दिया गया है। अंतः साक्ष्य के आधार पर जायसी का जन्म 900

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

हिजरी के लगभग हुआ माना जाता है। जायसी ने अपनी रचना आखिरी कलाम में एक स्थान पर लिखा है- भौ अवतार मोर नौ सदी। तीस बरस ऊपर कवि बदी।[23]

इस आधार पर कहा जा सकता है कि जायसी का जन्म 900 हिजरी अर्थात 1492 ई. के आसपास हुआ। इनका जन्म स्थान जिला रायबरेली में जायस नगर था। जायस में जन्म लेने के कारण ही यह जायसी कहलाए। अपने जन्म स्थान के संबंध में वे लिखते हैं-

जायस नगर मो अस्थानु तहाँ आई कवि कीन्ह बखानु।

मलिक इनकी पैतृक उपाधि थी। इनके पिता का नाम मलिक शेख में ममरेज या मलिक शेख अशरफ था। इनके गुरु सैयद अशरफ तथा मुहिउद्दीन थे। अपने गुरु के संबंध में जायसी लिखते हैं-

सैय्यद अशरफ पीर हमारा।
जेहि मोहि पंथ दीन्ह उजियारा।

जायसी निजामुद्दीन औलिया के वंशज थे। जायसी प्रतिभा के धनी परंतु शरीर के कुरूप थे। अंतः साक्ष्य के अनुसार जायसी एक नेत्र से विहीन तथा एक कान से रहित थे। एक जनश्रुति के अनुसार शेरशाह सूरी ने इनकी कुरूपता का मजाक उड़ाया था तब इन्होंने बड़े शांत स्वभाव से शेरशाह को जवाब दिया-मोहि का हंससि, के कोहरिहं? अर्थात तुम मुझ पर हंसे हो या उस कुम्हार पर अर्थात ईश्वर पर जिसने मुझे बनाया है। शेरशाह इस बात से अत्यंत लज्जित हुए और इसके बाद उन्होंने जायसी का अत्यधिक सम्मान किया। अमेठी नरेश रामसिंह भी इन्हें अपना गुरु मानते थे। ऐसा माना जाता है कि अमेठी के आसपास के जंगलों में एक शिकारी के तीर लगने से जायसी का निधन हुआ। इनकी मृत्यु सन् 1542 ईस्वी के आसपास मानी जाती है। अमेठी नरेश ने जायसी की यहीं पर एक समाधि बनवा दी जो अब भी मौजूद है।[24]

जायसी की छह प्रमुख रचनाएं मानी गई हैं जिनमें 'आखिरी कलाम', 'पद्मावत', 'अखरावट', 'मसलनामा', 'कहरनामा' तथा 'कन्हावत' है। 'पद्मावत' इनकी कीर्ति का आधार स्तंभ है। इस महाकाव्य में चित्तौड़ के राजा रतनसेन तथा सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन किया गया है। जायसी की काव्यगत विशेषताएं इस प्रकार है-

इतिहास और कल्पना का अद्‌भुत मिश्रण:
जायसी ने अपने काव्य में इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय किया है। 'पद्मावत' महाकाव्य इसका प्रमाण है। इस काव्य का पूर्वार्ध यदि कल्पित है तो उतरार्द्ध ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। इसमें रतनसेन, अलाउद्दीन, नागमती, पद्मावती आदि ऐतिहासिक पात्र हैं तथा अन्य पात्र काल्पनिक है। घटनाओं के वर्णन में कवि ने अपनी कल्पना शक्ति का अद्‌भुत परिचय दिया है। अलाउद्दीन के चित्तौड़ पर आक्रमण की ऐतिहासिक घटना का सुंदर वर्णन हुआ है। पद्मावत का सिंहलद्वीप वर्णन कवि की कल्पना शक्ति कहा अद्‌भुत उदाहरण है-
सब संसार परथ मैं आए सातौं दीप ।
एक दीप नहिं उत्तिम सिंघलदीप समीप

लोक संस्कृति में लोक जीवन का वर्णन:

जायसी का काव्य लोक संस्कृति और लोक जीवन का बहुत सुंदर वर्णन करता है। उन्होंने अपने काव्य में हिंदू-मुस्लिम एकता का तो समर्थन किया ही है, साथ ही भारतीय लोक संस्कृति, तीज-त्योहार, आदर्श, अंधविश्वास, जादू-टोना, मंत्र-तंत्र, तीर्थ-व्रत आदि का भी वर्णन किया है। उन्होंने हिंदू धर्म के सिद्धांतों, विवाह-संस्कार, रहन-सहन का जीवंत वर्णन किया है। पद्मावत की कथा पूर्ण रूप से भारतीय पृष्ठभूमि पर आधारित है। उनके नारी पात्र भारतीय आदर्श नारी का प्रतीक है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम की व्यंजना:

पद्मावत केवल जायसी का ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य का सफल एवं लोकप्रिय महाकाव्य है। इसमें कवि ने लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। यह महाकाव्य सूफी मत के सिद्धांतों के अनुसार आध्यात्मिक प्रेम को अभिव्यक्त करता है। पद्मावत की नायिका अल्लाह का प्रतीक है तो रतन सेन साधक है-

रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती । रतन पदारथ मानिक मोती॥ जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी । तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥

प्रेम की पीर के कवि:
जायसी प्रेम की पीर के कवि कहे जाते हैं। विरहजनित प्रेम में एक विलक्षण तीव्रता और निराली तड़प होती है। जायसी ने अपने प्रेम वर्णन में हृदय की कोमल वेदना, विरह की व्यापकता, तीव्रता, मार्मिकता और तन्मयता को अत्यंत प्रभावशाली अभिव्यक्ति दी है। पद्मावत का नागमती विरह खंड विरह वर्णन की दृष्टि से हिंदी साहित्य का अप्रतिम काव्य खंड है। नागमती का विरहवर्णन में बारहमासा का एक विशेष स्थान है। प्रत्येक मास की प्राकृतिक दशा के साथ नागमती के हृदय के शोक और हर्ष की जो योजना की गई है, वह अपने आप में अनुपम है।[25] नागमती के प्रेम की पीड़ा पाठक के मन को सहानुभूति और वेदना से भर देती है। कुछ उदाहरण देखिए-
नागमती उपवनों में रोती फिरती है। उसके विलाप से घोंसलों में बैठे हुए पक्षियों की नींद हराम हो गई है-

फिरि फिरि रोव, कोइ नहीं डोला ,आधी रात विहंगम बोला॥
तू फिरि फिरि दाहै सब पाँखी, केहि दुख रैनि न लावसि आँखी॥

इस सहानुभूति की सम्भावना रानी के हृदय में होती कैसे है? यह समझकर होती है कि भौंरा और कौवा दोनों उसी विरहाग्नि के धुएँ से काले हो गए हैं जिसमें मैं जल रही हूँ। सम दु:खभोगियों में परस्पर सहानुभूति का उदय अत्यन्त स्वाभाविक है।

पिउ सों कहेउ सँदेसड़ा, हे भौंरा ! हे काग !
सो धनि बिरहै जरि मुई, तेहिक धुवाँ हम्ह लाग॥

श्रृंगार वर्णनः
जायसी के काव्य में प्रधानता रसराज श्रृंगार की है। पद्मावत में श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों का अद्भुत वर्णन किया गया है। संयोग रस का वर्णन रतनसेन, नागमती, तथा पद्मावती के आश्रय से किया गया है। जब पद्मावती को पाने के लिए रतनसेन ने घर छोड़ने का निर्णय किया तब नागमती ने उससे कहा-

तू जोगी होइगा बैरागी, हौं जरि छार भयऊ तोहि लागी।

राजा रतन सिंह नागमती को मनाते हुए कहते हैं-

कंठ लाई के नारि मनाई। जरि जो बेलि सींचि पहुताई।

इसी प्रकार पद्मावती और रतन सेन के विवाह के बाद भी संयोग पक्ष के कुछ सुंदर चित्र अंकित किए गए हैं। वियोग श्रृंगार की दृष्टि से जायसी को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। पद्मावती में नागमती का विरह वर्णन हिंदी साहित्य की विशेष उपलब्धि है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

उदात्त चरित्र चित्रणः

जायसी का काव्य उदार चरित्र चित्रण का उदाहरण है। कवि ने भारतीय पात्रों का चरित्र चित्रण भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अनुसार किया है। नागमती और पद्मावती दोनों भारतीय आदर्श पतिव्रता नारी का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। हीरामन तोता, हंस, देवी देवता, अप्सराएं आदि सभी पात्रों का अद्भुत चित्रण किया गया है। यह पात्र स्थिति के अनुसार कथा को आगे बढ़ाते हैं। रतनसेन स्वयं एक आदर्श राजा के साथ-साथ आदर्श प्रेमी है। गोरा, बादल आदर्श वीर हैं।अलाउद्दीन का तामसी पात्र है जो कामी और लोभी है तथा राघव चेतन दुष्ट वृत्ति का पात्र है। इस प्रकार जायसी ने सात्विक और तामसिक दोनों प्रकार के पात्रों का कथा अनुसार प्रभावशाली चित्रण किया है।

वह पदमावति चितउर जो आनी । काया कुंदन द्वादसबानी॥
कुंदन कनक ताहि नहिं बासा । वह सुगंधा जस कँवल बिगासा॥
कुंदन कनक कठोर सो अंगा । वह कोमल, रँग पुहुप सुरंगा॥
ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि लागा । सोइ मलयागिरि भयउ सभागा॥

रहस्यानुभूतिः

जायसी को सफल रहस्यवादी कवि कहा जा सकता है। आचार्य शुक्ल के अनुसार भावात्मक रहस्यवाद केवल जायसी में ही है। वे प्रेमी को परमात्मा का और प्रेमिका को आत्मा का प्रतीक मानते हैं। पद्मावत की नायिका पद्मावती अल्लाह का प्रतीक कही जा सकती है और रतन सेन साधक है। सिंहलदीप में कवि ने हठयोग की प्रवृत्ति को अपनाया है। उन्होंने दांपत्य भाव के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के संबंधों को प्रकट किया है। पद्मावती के रूप सौंदर्य में अभी तो सर्वत्र ईश्वर की झलक दिखाई पड़ती है। उन्होंने संपूर्ण पात्रों का प्रतीक योजना के माध्यम से जो वर्णन किया है और रहस्यवाद का अनुपम उदाहरण है-

तन चितउर, मन राजा कीन्हा । हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा ॥
गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा । बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा ?॥
नागमती यह दुनिया-धंधा । बाँचा सोइ न एहि चित बंधा ॥
राघव दूत सोई सैतानू । माया अलाउदीं सुलतानू ॥
प्रेम-कथा एहि भाँति बिचारहु । बूझि लेहु जौ बूझै पारहु ॥

प्रकृति वर्णनः

प्रकृति वर्णन में जायसी ने अधिक रूचि ली है। उन्होंने मानव प्रकृति के साथ-साथ बाह्य प्रकृति का भी सुंदर चित्रण किया है। कुछ स्थानों पर तो ऐसा लगता है मानो प्रकृति मानव के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट कर रही है।सिंहलदीप वर्णन करते हुए कवि ने प्रकृति के छोटे से छोटे कण से लेकर विशाल स्वरूप का चित्रण किया है। जहां एक ओर वे नदी, पर्वत, सूर्य, चांद, आकाश आदि का वर्णन करते हैं वहीं दूसरी ओर नगर, गांव, रण सज्जा, सेना का प्रयाण, जल आदि का भी वर्णन करते हैं-

कीन्हेसि हेवँ समुद्र अपारा। कीन्हेसि मेरू खिखिद् पहारा।
कीन्हेसि नदी नार आं झरना। कीन्हेसि नगर यच्छ बहु बरना।
कीन्हेसि सीप मेति बहु भरे। कीन्हेसि बहुतर नग निरमरे।

भाषा शैलीः

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है। इसमें देशज व अन्य क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों का समावेश सहज ही हुआ है। जायसी के काव्य की भाषा सरलता व स्पष्टता, स्वाभाविकता तथा प्रसाद गुण आदि विशेषताएं लिए हुए हैं। दोहा-चौपाई इनका प्रिय छंद है। मसनवी तथा प्राकृत प्रेमाख्यानों की शैलियों का इन्होंने सुंदर समन्वय किया है। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा अतिश्योक्ति तथा समासोक्ति कवि के प्रिय अलंकार रहे हैं। कवि की भाषा का एक उदाहरण देखिए-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

रूप सुरूप पदमिनी नारी।
पद्य गंध तिन्ह अंग बसाही। भंवर लागी तिन्ह संग फिरारी।

उपर्युक्त काव्यगत विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि जायसी एक सफल एवं श्रेष्ठ कवि है तथा उनका साहित्य सार्वकालिक है।[20]

निष्कर्ष

जायसी ने अपने काव्य में इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय किया है। 'पद्मावत' महाकाव्य इसका प्रमाण है। इस काव्य का पूर्वार्ध यदि कल्पित है तो उतरार्द्ध ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। इसमें रतनसेन, अलाउद्दीन, नागमती, पद्मावती आदि ऐतिहासिक पात्र हैं तथा अन्य पात्र काल्पनिक है। घटनाओं के वर्णन में कवि ने अपनी कल्पना शक्ति का अद्भुत परिचय दिया है। अलाउद्दीन के चित्तौड़ पर आक्रमण की ऐतिहासिक घटना का सुंदर वर्णन हुआ है। पद्मावत का सिंहलद्वीप वर्णन कवि की कल्पना शक्ति कहा अद्भुत उदाहरण है-

सब संसार परथ मैं आए सातौं दीप।

एक दीप नहिं उत्तिम सिंघलदीप समीप

पद्मावत केवल जायसी का ही नहीं बल्कि हिंदी साहित्य का सफल एवं लोकप्रिय महाकाव्य है। इसमें कवि ने लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। यह महाकाव्य सूफी मत के सिद्धांतों के अनुसार आध्यात्मिक प्रेम को अभिव्यक्त करता है। पद्मावत की नायिका अल्लाह का प्रतीक है तो रतन सेन साधक है-

रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती।

रतन पदारथ मानिक मोती॥

जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी।

तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥

जायसी ने भारतीय आध्यात्म के जिन रहस्यों को ढूंढ कर उन्हें जनोपयोगी समझा, उन्हीं का विकास कन्हा क्त' में देखा जा सकता है। एकेश्वरवाद की सैद्धा न्तिक भक्ति और सूफी आग्रहों में दीसित होते हुए भी जायसी ने यदि कन्हा क्त' में अक्तारवाद और बहुदेववाद सैद्धान्तिक स्तर पर भले ही न सही, व्या वहा रिक धरातल पर स्वीकार किया है तो यह मका सूफी मतवाद से हट कर एक नवीन चिंतन ही था जो भारतीय परिवेश में जमीनी अहसास के लिए आवश्यक भी था।[21] यह कला अत्युक्ति न होगा कि जायसी ने कन्हा वत' के माध्यम से दर्शन, धर्मादि पत्रों में समन्वय के नये समीकरणों को गढ़ने में पहल की। मुला दाउद के चांदायन' में राम और कृष्ण का उल्लेख अवश्य मिलता है किन्तु पौराणिक आख्यान को लेकर कथा वस्तु के रूप में ग्रहण करने का स्तुत्य प्रयास जायसी द्वारा पहली बार किया गया। जायसी ने 'कन्हा का' में कृष्ण को तो भगवान विष्णु का अवतार माना ही है, साथ ही उन्होंने अन्य देवी-देवताओं क भी स्पष्टोल्लेख किया है। स्वयं कृष्ण विष्ण के दस अवतारों की चर्चा नन्द से करते हैं[22]

कन्ह कहा रहु जनि पिता। हाँ गोविन्द मोसो को जिता।।

हह हि करत दी ठि खो अहा। मच्छ कच्छ औरूप बराहा।।

हहहि सो बा का रूपी करा। हह हि सत बली राजा करा।।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

हंहहि सो नार सिंह बरिया रा। हाना कुस क पैट जै फारा।।

हहहि सो परसुराम पतबा हू। मारा महीं सहया बाहू।।

हंहहि सो श्रीराम औतारा। महीं लंकपति रावन मारा।।

हंहहि सो नारायन विरंजी। महीं मार काखे दर रंजी।।

हहंहि सो पुरुष कन्ह अब।'

जायसी सूफी मुसलमान होते हुए भी भारत के प्राचीन श्रुति-दर्शन से अपरिचित नहीं थे। उनको अपनी पवित्र पुस्तक कुरान के समकक्ष रखते हैं।

वे वेदों को भी कुरान के समान अपौरुषेय मानते हैं। उन्होंने वेदों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए 'पद्मा वत' में कहा है --

वेद पंथ जे नहिं चल हिं, ते भल हिं म माफ।

वेद क्वन मुख साच जो कहा। सां जुग-जुग स्थिर होह रहा।।

इसी प्रकार कन्हा वत' में भी जायसी ने वेदों और पुराणों का उल्लेख किया है --

प्रथम जो भा मानुस के भेसू।

सिरजा असा बिस्नु महसू।।

असा उरझा बेद पुराना।

महा देव माया लिपटाना।।

जायसी ने कन्हा कत के माध्यम से जिस सांस्कृतिक एकता की बात की है, वह प्रदिप्त अथवा थोपी हुई नहीं है, बल्कि वह उस सहज भावभूमि पर संचरित है जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा की मुक्तावस्था एवं भेदों से अद की और प्रयाण करता है। महाकवि जायसी ने प्रचलित भारतीय सास्कृतिक और साहित्यिक परम्पराओं से जुड़ने एवं उनका प्रतिनिधित्व करने का प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने सुफी मसन वियों के झुल भण्डार के साथ ही भारतीय जनता के समक्षा प्रेम मार्ग और प्रेम की पीर के ऐसे गदर्श उपस्थित किये, मिका पालन वह किसी भी प्रचलित सांस्कृतिक या धार्मिक परम्परा के अतिक्रमण किये और आसानी से कर सके। इस प्रकार जायसी ने भारत में भावात्मक एकता के साथ-साथ मिश्रित सास्कृतिक परम्पराओं का भी सूत्रपात किया।[23] जायसी ने अपने साहित्य में हिन्दू कथाओं को लेकर उनमें सूफी सिद्धान्तों को इस तरह गूंथा है कि जिससे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही उसमें रस ले सके। काव्य शैली इत्यादि में भी भारतीय कविता-काव्य और मसन वियों के ढंग का उन्होंने अदभुत सामंजस्य किया है। बारहमासा और नख सिख वर्णन की भारतीय परम्परा को जायसी ने अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दिया है। बैर, घृणा, भेट और शोषण पर जायसी ने सूफी प्रेम का मरह्म लगाकर पारस्परिक प्रेम और सदभाव के माध्यम से हिन्द तथा मुसलमान धर्म को पास लाने का प्रयत्न किया है। पारस्परिक प्रेम और सदभावना ही ईश्वरीय प्रेम और आकर्षण है, यही मूल मंत्र कवि ने अपने साहित्य द्वारा प्रचारित किया है। वस्तुत महाकवि जायसी ने कहावत' में भावात्मक एकता की भावना को अपने समक्ष रखते हुए लोक हृदय की सबसे सवेदनशील भावना[24]- प्रेम के सन्दर्भ में तात्कालिक समाज में प्रचलित विभिन्न मतों, वादों एवं दार्शनिक दृष्टियों में सामंजस्य लाने का महत्वपूर्ण कार्य

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 4, April 2023 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2023.1004030

किया। जायसी की यह समन्वय भावना कन्हा वत ' में अभिव्यक्त प्रेम वर्णन , दर्शन , धर्म , संस्कृति और साहित्य शली में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।[25]

संदर्भ

1) *अब्दुल वा हिद लिगामी* (2014) *इकायके हिन्दी (सुवाद अतहर सास रिजवी) नागरी प्रचारिणी सभा , काशी वि० सं* 0 2014
2) *डॉ. श्यामनन्दन किशोर* (2015) (*अब्दुल कददूस गंगोही के रुश्दन मा का अनुवाद) भारत प्रकाशन मंदिर , अलीगढ़* - 1971 *ई०*
3) *डॉ. असद अली* (2016) *भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव एस०ई०एस) प्रकाश*
4) *डॉ. रामविलास शर्मा* (2014) *राजपाल एण्ड संस दिल्ली* , 1978 *ई०*
5) *डॉ. उमापति राय चंदेल हिन्दी सूफी काव्य में पौराणिक आस्थान भनिनव प्रकाशन , दिल्ली* , 1976 *ई०*
6) *कन्हैया सिंह हिन्दी सूफी काव्य में हिन्दू संस्कृति का चित्रण और श्रिरूपण भारती भण्डार , इलाहाबाद , पृ* 0 *सं* 0 1973 *ई* 0
7) *डॉ. कमल कुलश्रेष्ठ हिन्दी प्रेमाख्यान काव्य चौधरी मान सिंह प्रकाशन अजमेर , पृ* 0 *सं* 0 1953 *ई०*
8) *के दामोदरन भारतीय चिन्तन परम्परा (अवाद श्री श्रीधरन) तृतीय संस्करण* - 1982 *ई० पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि. दिल्ली* - 55
9) *गुलाव राय भारतीय संस्कृति रवीन्द्र प्रकाशन , ग्वालियर परिवर्धित संस्करण* , 1974
10) *चन्द्रबली पाण्डेय तसञ्चुफ अथवा सूफी मत सरस्वती मंदिर , सारस प्र* 0 *सं* 0 1948 *ई० सं* 0
11) *जगमोहन वर्मा चित्रावली नागरी प्रचारिणी सभा , काशी वि० सं* 0 2038
12) 12. डॉ . जयदेव सूफी महा कवि जायसी भारत प्रकाशन मंदिर , अलीगढ़ प्र 0 सं 0 1966 ई०
13) Beohar, N. C. (2020). A Tale of Three Lawyers: A Comparative Study of Mahatma Mohandas Karamchand Gandhi, Quaid-e-Azam Mohammad Ali Jinnah, and Bharat Ratna Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (अंग्रेज़ी में). Notion Press. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-1-64850-687-1. अभिगमन तिथि 13 जनवरी 2022.
14) उर्रहमान, महमूद. "मलिक मुहम्मद जायसी - संक्षिप्त परिचय". इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र. मूल से 14 मई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २ अगस्त, २०१७. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
15) ↑ "मलिक मुहम्मद जायसी". हिन्दी कविता.कॉम. मूल से 29 जुलाई 2017 को पुरालेखित.
16) ↑ (आखिरी कलाम 10)
17) ↑ (आखिरी कलाम 4)
18) ↑ (सन नौ से सैंतालीस अहै- पद्मावत 24)
19) ↑ "जायसी का जीवनवृत्त / मलिक मुहम्मद जायसी / रामचन्द्र शुक्ल". गद्यकोश.कॉम. मूल से 7 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २ अगस्त, २०१७. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
20) ↑ "कहाँ से आई थीं पद्मावती?". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 नवंबर 2017.
21) ↑ "'Padmavat' reminds us that a major casualty of the gory Rajput conflicts were Rajput women". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 नवंबर 2017.
22) ↑ "Absurdity of epic proportions: Are people aware of the content in Jayasi's Padmavat?". मूल से 25 नवंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 27 नवंबर 2017.
23) ↑ शिवकुमार मिश्र, भक्तिआन्दोलन और भक्ति काव्य, पृ.८६
24) ↑ भूमिका, त्रिवेणी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सं.कृष्णानद, पृ.९
25) ↑ "सूफी कवि : मलिक मुहम्मद जायसी : एक परिचय" (पीएचपी). वर्चुअल लर्निंग प्रोग्राम. दिल्ली विश्वविद्यालय. अभिगमन तिथि २ अगस्त, २०१७. |accessdate= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com

www.ijmrsetm.com